ग्रामीण सामाजिक संरचना एवं जीवन शैली पर नगरीय प्रभाव

डॉ. संजय खरे

सह. प्राध्यापक - समाजशास्त्र

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

''वर्तमान भारत में ग्रामीण जीवन शैली का स्थान नगरीय संस्कृति के मूल्य व प्रवृत्तियाँ लेती जा रही हैं। आज ऐसा कोई भी गाँव अपवाद रूप में नहीं बचा है जो नगरीय संस्कृति व मूल्यों से अछूता हो । प्रथाओं - परम्पराओं के केन्द्र के रूप में पहचाने जाने वाले ग्रामीण समाज में परिवर्तन विभिन्न क्षेत्रों में जैसे पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा शैक्षणिक आदि में प्रभावपूर्ण ढंग से परिलक्षित हुए हैं। जहाँ ग्रामीण समुदाय आध्यात्मवाद, धर्म, ईश्वर, नैतिकता तथा पवित्रता के प्रतीक माने जाते थे। वहीं आज इन मूल्यों पर नगरीय संस्कृति के मूल्य वाह्य आडम्बर, कृत्रिमता, वैयक्तिकता तथा असहजता ने ले लिया है। धर्म के महत्व में कमी आई है, वहीं पर आज धर्म निरपेक्ष मूल्यों का महत्व बढ़ा है।''

मुख्य शब्द - संस्कृति, ग्रामीण जीवन शैली, पलायन।

ग्रामीण मूल्यों तथा ग्रामीण जीवन शैली का स्थान नगरीय संस्कृति के मूल्य व प्रवृत्तियाँ लेती जा रही हैं। आज ऐसा कोई भी गाँव अपवाद रूप में नहीं बचा है जो नगरीय संस्कृति व मूल्यों से अछूता हो । प्रथाओं - परम्पराओं के केन्द्र के रूप में पहचाने जाने वाले ग्रामीण समाज में परिवर्तन विभिन्न क्षेत्रों में जैसे - सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा शैक्षणिक आदि में प्रभावूपर्ण ढंग से परिलक्षित हुए हैं। जहाँ ग्रामीण समुदाय आध्यात्मवाद, धर्म, ईश्वर, नैतिकता तथा पवित्रता के प्रतीक माने जाते थे। वहीं आज इन मूल्यों पर नगरीय संस्कृति के मूल्य वाह्य आडम्बर, कृत्रिमता, अपवित्रता तथा असहजता ने ले लिया है। धर्म के महत्व में कमी आई है, वहीं आज धर्म निरपेक्ष मूल्यों का महत्व बढ़ा है। धार्मिक कट्टरता का स्थान धार्मिक सहिष्णुता ने ले लिया है। 'इला शाह' ने अपने शोध पत्र के माध्यम से यह बताया है कि नगरीकरण किस प्रकार ग्रामीण जीवन पर प्रभाव डालता है और ग्रामीणों को पलायन के लिए क्यों विवश होना पड़ता है। बढ़ते नगरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण शहरों में श्रमिकों की मांग बहुत तेज गति से बढ़ती गयी। स्कूलों की शिक्षा अधूरी छोड़कर भी युवा पलायन करने लगे हैं। धीरे-धीरे बढ़ते पलायन के कारण कृषि कार्य के लिए सक्षम लोगों की कमी होने लगी क्योंकि जो युवा शहरों में रोजगांर प्राप्त कर रहे थे वे फिर उन्ही क्षेत्रो में स्थायी होकर बस गये

और अपने पैतृक स्थानों को स्थायी तौर पर छोड़ते गये। ऐसे में कृषि कर्मकारों की कमी के कारण कृषि योग्य भूमि बंजर हो गयी। साथ ही वनों, चारागाहों के घटने व सिमटने से उनकी पशु धारण क्षमता भी घटती गयी। आज शायद ही ऐसा कोई गाँव होगा जहाँ से लगभग 50 प्रतिशत जनता पलायन नहीं कर रही है।[1]

वर्तमान ग्रामीण जीवन मुक्त जीवन शैली को अपना रहा है जो कि पूर्णतया नगरीय दिखलाई पड़ रही है। आज ग्रामीण सम्बन्धों में भी व्यापक परिवर्तन आये हैं। ग्रामीण घनिष्ठता, भाईचारा व सहयोगी जीवन का स्थान कृत्रिमता व आडम्बर लेते जा रहे हैं। ग्रामीण समुदाय अपनी मौलिकता को खोता जा रहा है। ग्रामीण सादगीपूर्ण जीवन भी नगरों की भांति आडम्बर व दिखावा पूर्ण होता जा रहा है। मानव व्यवहार यन्त्रवत होता जा रहा है। मानव शांतिपूर्ण जीवन की खोज गाँवों में करता था किन्तु ग्रामीण जीवन में मूलभूत परिवर्तन होने के कारण ग्राम्य जीवन भी यन्त्रवत होता जा रहा है।

कान्ता भीणा ने स्पष्ट किया कि नगरीकरण, औद्योगीकरण, उच्च आधुनिक शिक्षा, राजनीतिक सामाजिक आन्दोलन एवं वर्ग संघर्ष परम्परागत जाति व्यवस्था के समक्ष चुनौती के रूप में उपस्थित हुए। शहरीकरण की प्रक्रिया ने जनजातीय महिलाओं के परम्परागत मूल्यों एवं संस्कारों के समक्ष चुनौती प्रस्तुत की है। इस नवीन प्रक्रिया ने जाति, धर्म, भाषा एवं क्षेत्र के बंधनों को तोड़कर अंतर वैयक्तिक संबंधों को वैचारिक आधार प्रदान किया। नई पीढ़ी के आधुनिक एवं प्रगतिशील विचारो ने पुरानी जनजातीय पीढ़ी को विवश कर दिया है कि वे स्थापित सामाजिक मूल्यों, परम्पराओं एवं मान्यताओं का पुनः परीक्षण करे।[2] यातायात तथा संचार-साधनों ने नगरीय मूल्यों को तेजी से ग्रामों की ओर प्रोत्साहित किया है। परिणाम स्वरूप ग्रामीण लोगों में भी राजनीतिक जागरूकता बढ़ी है। ग्राम्य जीवन का अभिन्न अंग टेलीविजन और मोबाइल फोन बनते जा रहे हैं। इनके क्षणिक अभाव होने पर मानव जीवन पंगु सा प्रतीत होता है। आज ग्रामीण समाज पर जनसंचार साधनों की वजह से नगरीय मूल्य एवं जीवन सीधे तौर पर पहुँच रहे हैं।

ब्रजेश कुमार सिंह ने भारतीय हिन्दू विवाह पर नगरीकरण के प्रभाव को अपने अध्ययन के माध्यम से बताने का प्रयत्न किया है। नगरीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप परिवार विवाह, धर्म, जाति आदि आधारभूत संस्थाएं परिवर्तन की तीव्र प्रकिया से गुजर रही हैं। निःसन्देह नगरीकरण का हिन्दू विवाह की संरचना एवं प्रकार्यात्मकता पर प्रभाव पड़ा है।

ग्रामीण जीवन में आज अनेक ऐसी दशाएँ उत्पन्न हुई है। जिनके प्रभाव से ग्रामीण परिवारों की परम्परागत संरचना तथा इनके कार्यो में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न होने लगे है। लोगों की मनोवृत्तियाँ, विचार तथा जीवन शैली में तेजी से परिवर्तन आ रहे हैं।

उद्देश्य - प्रस्तुत शोध का उद्देश्य राहतगढ़ ब्लाक के ग्रामीण जीवन की सामाजिक संरचना एवं जीवन शैली पर नगरीय प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार है।

1. ग्रामीण पारिवारिक संरचना एवं वैवाहिक ढाँचे पर नगरीय प्रभाव का अध्ययन।

2. ग्रामीण जीवन के परम्परागत रीति रिवाजों एवं जीवन शैली में नगरीय प्रभाव का अध्ययन ।

3. ग्रामीण शिक्षा पर नगरीय प्रभाव का विश्लेषण करना ।

शोध अभिकल्प - प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक एवं अन्वेषणात्मक शोध अभिकल्प लिया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में राहतगढ़ नगर के निकटवर्ती ग्रामों को उद्देश्यपूर्ण निर्दशन के द्वारा चार ग्रामों मिर्जापुर, बहादुरपुर, झिला तथा वागरोद का चयन किया गया है। ग्रामों के चयन में इस बात का ध्यान रखा गया है कि राहतगढ़ नगर के निकट स्थित गाँवों को चुना जाये। इन चयनित ग्रामों में परिवारों की कुल संख्या 800 हैं। चयनित ग्रामों के परिवारों में से कुल 75 परिवारों का चयन समग्र के रूप में उसी अनुपात में किया गया है। परिवारों का चुनाव करने के लिए ग्राम प्रधान से सूची प्राप्त करके सरल दैव निदर्शन पद्धति की लॉटरी विधि का प्रयोग किया गया है।

उपलब्धियाँ

तालिका संख्या–1

पारिवारिक समस्याओं के निराकरण में बुजुर्गो की सलाह

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉ	49	65
नही	18	24
कभी-कभी	8	11
कुल योग	75	100

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट होता है कि कुल 75 उत्तरदाता में से 65 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक समस्याओं के निराकरण में बुजुर्गो की सलाह लेते हैं । 24 प्रतिशत उत्तरदाता बुजुर्गो की सलाह नही लेते हैं तथा 11 प्रतिशत उत्तरदाता बुजुर्गो की सलाह कभी-कभी लेते हैं।

तालिका संख्या – 2

प्रेम-विवाह के प्रति उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
उचित	34	45
अनुचित	41	55
कुल योग	75	100

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 45 प्रतिशत उत्तरदाता प्रेम विवाह को उचित मानते हैं तथा अधिसंख्यक 55 प्रतिशत उत्तरदाता प्रेम विवाह को अनुचित मानते हैं।

तालिका संख्या- 3

बाल विवाह के प्रति दृष्टिकोण

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
उचित	8	11
अनुचित	67	89
कुल योग	75	100

तालिका संख्या 3 से स्पष्ट होता है कि उत्तरदातों की नगण्य संख्या 11 प्रतिशत बाल-विवाह को उचित मानती हैं तथा जबकि अधिकांश संख्या 85 प्रतिशत उत्तरदाता बाल-विवाह को अनुचित मानते हैं।

तालिका संख्या- 4

विधवा विवाह के प्रति उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
पक्ष में हैं	44	59
पक्ष में नहीं हैं	31	41
कुल योग	75	100

तालिका संख्या 4 से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता 59 प्रतिशत विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में हैं तथा 41 प्रतिशत उत्तरदाता विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में नहीं हैं।

तालिका संख्या- 5

उत्तरदाताओं द्वारा मोबाइल फोन का प्रयोग

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	68	91
नहीं	07	9
कुल योग	75	100

तालिका संख्या 05 से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं में से अधिसंख्यक (91 प्रतिशत) उत्तरदाता मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं, तथा 91 प्रतिशत उत्तरदाता मोबाइल फोन का प्रयोग नही करते हैं।

तालिका संख्या- 6

शिक्षा ग्रहण कर रहें बच्चों के विद्यालय

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
सरकारी विद्यालय	64	85
अंग्रेजी माध्यम विद्यालय	11	15
कुल योग	75	100

तालिका संख्या 6 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन के अधिकांश 85 प्रतिशत उत्तरदाता अपने बच्चों को सरकारी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करा रहें है, तथा 15 प्रतिशत उत्तरदाता अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करा रहें हैं।

तालिका संख्या- 7

महिलाओं के लिए शिक्षा की अनिवार्यता

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉं	68	91
नहीं	07	09
कुल योग	75	100

तालिका संख्या 7 से स्पष्ट होता है कि कुल 75 उत्तरदाताओं में से अधिकांशतः 91 प्रतिशत उत्तरदाता महिलाओं के लिए शिक्षा को अनिवार्य मानते हैं तथा .07 प्रतिशत उत्तरदाता महिलाओं के लिए शिक्षा को अनिवार्य नही मानते हैं।

निष्कर्ष - अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नगरीय प्रभाव के फलस्वरूप ग्रामीण जीवन पर प्रभाव पड़ा है ग्रामीण सामाजिक संरचना एवं जीवन शैली प्रभावित हुई है। पहले की अपेक्षा अब ग्रामीण परिवारों में पारिवारिक समस्याओं के निराकरण में बुजुर्गो की सलाह कम ली जाती है कुछ परिवारों में लोग अभी भी पूरी तरह से बुजुर्गो की सलाह पर ही निर्भर हैं। नगरीय प्रभाव से गाँवों में भी प्रेम विवाह का प्रचलन काफी बढ़ गया है किन्तु फिर भी अधिकांश ग्रामीणजन प्रेम विवाह को अभी भी गलत मानते हैं। ग्रामीण समाज में इक्का-दुक्का ऐसे लोग मौजूद हैं जो बाल-विवाह को अभी भी उचित मानते है। आधुनिक समाज में विधवा विवाह को अब गलत नही समझा जाता किन्तु समाज में कुछ लोग अभी भी इसे हेय दृष्टि से देखते हैं। ग्रामीण परिवारों में पहले पारिवारिक खर्च मुखिया के आदेशानुसार ही होता था किन्तु वर्तमान में खर्च अब परिवार के अन्य सदस्यों के आदेशानुसार भी होने लगा है। रहन-सहन का ढंग ग्रामीणों का बदलने लगा है, वह भी आधुनिक जीवन जीना पसन्द करने लगे हैं। आज गावों में लगभग घर-घर मोबाइल फोन है हर व्यक्ति मोबाइल का प्रयोग करने लगा है कुछ जो प्रयोग नहीं करते वह निर्धनता या अशिक्षा, अज्ञानता के कारण मोबाइल फोन का प्रयोग नही कर पातें। आज के दौर में प्रत्येक ग्रामीण व्यक्ति अपने बच्चों को अंग्रेजी शिक्षा दिलवाना चाहते हैं और कुछ ग्रामीण अंग्रेजी शिक्षा दिला भी रहे है, जो अपने बच्चों को सरकारी विद्यालय में शिक्षा दिला रहे है वह निर्धनता के कारण दिला रहे हैं। अधिकांश ग्रामीणों का मानना है कि महिलाओं के लिए शिक्षा अनिवार्य है, महिलाओं को शिक्षित होना जरूरी है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि नगरीय प्रभाव ने ग्रामीण सामाजिक संरचना एवं जीवन शैली को काफी प्रभावित किया हैं। वर्तमान ग्रामीण समाज में नवीन मूल्यों एवं प्रवृत्तियों का जन्म हो रहा है। वर्तमान

ग्रामीण जीवन मुक्त जीवन शैली को अपना रहा है जो कि पूर्णतया नगरीकृत दिखलाई पड़ रहा है। ग्रामीण समुदाय अपनी मौलिकता को खोता जा रहा है।

सन्दर्भ -

1. शाह, इला; 'पलायन कारण एवं परिणाम', राधा कमल मुकर्जी: चिन्तन एवं परम्परा, वर्ष 14, अंक 1, पृ. 53, 2012
2. मीणा, कान्ता; 'जनजातीय महिला विकास एवं भूमण्डलीकरण: एक समाजशास्त्रीय संदर्भ, राधा कमल मुकर्जी, चिन्तन एवं परम्परा, वर्ष 15, अंक 1, पृ. 63, 2013
3. सिंह, बृजेश कुमार; 'हिन्दु विवाह पर आधुनिकीकरण का प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, राधा कमल मुकर्जी चिन्तन एवं परम्परा, वर्ष 16, अंक 1, पृ. 15, 2014
4. प्रसाद, श्याम सुन्दर; ग्रामीण विकास की प्रवृत्तियां एवं सामाजिक परिवर्तन, योजना, वर्ष 56 अंक 01, जनवरी 2015